राजु रामसा

मुकेश मालवीय

राजू रामसा पावरझंडा गाँव में रहता है। इसी गाँव के प्राइमरी स्कूल में मैं पढ़ाया करता था। राजू रामसा नाम इस स्कूल के हाज़िरी रजिस्टर में कई साल तक दर्ज रहा है। आज राजू लगभग 18 साल का है। कुछ दिन पहले जंगल में रीछ ने उस पर हमला कर दिया था। वह रोज़ की तरह रोटी की पोटली और कुल्हाड़ी लेकर मवेशियों को चराने जंगल जा रहा था। अचानक एक रीछ सामने आ गया। कहते हैं रीछ आदमी की आँख पर हमला करता है। यह बात राजू रामसा को शायद पता थी इसलिए वह औंधा ज़मीन पर गिर गया। इधर रीछ ने उसे कँधे से पकड़कर पलटाने की कोशिश की उधर गाय, भैस, बैलों ने हुंकार भरी। उनका गुस्सा देख रीछ डरकर भाग गया। राजू का कँधा बुरी तरह घायल हो गया था। अब तो वह ठीक हो गया है। पर, मैं तो यहाँ उसके बारे में कुछ और ही बताने निकला था...।

बात आज से दस-ग्यारह साल पहले की है। उन दिनों राजू रामसा नाम मेरे पहली कक्षा के हाज़िरी रजिस्टर में दर्ज था। सैताब किशोरी, डोमू, विलेश हरिचंद्र आदि कई नामों की तरह। पर, हाज़िरी के लिए जब मैं राजू रामसा पुकारता तो कोई "यस सर" नहीं बोलता था। तब मैंने बच्चों से पूछा कि यह राजू रामसा कहाँ रहता है? स्कूल क्यों नहीं आता? बच्चों ने बताया, "मस्साब वो घर पर ही रहता है। वह थोड़ा अलग है। उसको कुछ समझता नहीं है।"

एक दिन मैं राजू के घर पहुँचा। वह रोटी बना रहा था। मैंने उसके पिताजी से बातचीत की। उनका नाम रामसा था। उन्होंने बताया, "इसकी माँ नहीं है। घर के काम यही करता है और थोड़ा बुद्धू जैसा है। कम दिमाग का।" मैंने राजू से भी बात की, "स्कूल चलोगे? जनाब, आपका नाम लिखा है वहाँ!" राजू ने कोई जबाव नहीं दिया। मैंने देखा, उसके चेहरे पर हमेशा की तरह बड़ी मासूम मुस्कुराहट थी। दूसरे दिन मैं स्कूल आते ही राजू को बुलाने उसके घर गया। राजू घर पर नहीं था। पता चला आज वो बैल चराने गया है। कोशिशें रंग लाईं। कुछ दिनों बाद राजू स्कूल आने लगा। वह स्कूल के दूसरे बच्चों की तरह ही था। हाँ, थोड़ा अलग ज़रूर था। वह शैतानी कम करता। दूसरे बच्चों की तरह वह किसी की शिकायत नहीं करता था। वह सभी की बातों को ध्यान से समझने ऐसा करते हुए उसकी आँखें बहुत सतर्क हो जातीं। लगता जैसे वो आँखों से भी सुनने की कोशिश कर रहा हो। उसके चेहरे पर मुस्कुराहट बराबर बनी रहती। राजू पर मैं खास ध्यान देता। मैं चाहने लगा कि हाज़िरी के समय जब मैं राजू रामसा पुकारूँ तो वह "यस सर" कहने के लिए वहाँ हो। राजू को सिखाना-पढ़ाना ज़रा धीरज का काम था। फिर वह दिन भी आया जब उसने अपना नाम लिखना, गिनना आदि सीख लिया। राजू तीन-चार सालों तक स्कूल में बना रहा। शायद आगे की पढ़ाई उसे बहुत उपयोगी नहीं लगी हो। राजू के साथी उसके साथ शरारत करते पर उसे गुस्सा नहीं आता था। हो सकता है कि इसी वजह से बच्चों की शरारतें बढ़ रही थीं। इन मौकों पर वो अपनी आँखों को और ज़्यादा सतर्क करता। तब भी वही भोली मुस्कुराहट उसके चेहरे पर तैर जाती। विरोध का भी उसके पास शायद यही तरीका था।

कुछ समय बाद मेरा तबादला हो गया। राजू रामसा मेरी यादों से धीरे-धीरे गुम होता गया। पर, कुछ दिन पहले जब मैंने राजू रामसा और रीछ की मुठभेड़ की खबर सुनी तो मैं उससे मिलने उसके घर गया। राजू अस्पताल से ठीक होकर घर आ गया था। उसके चेहरे की वह भोली मुस्कुराहट थोड़ी बड़ी होकर अब भी कायम थी। वह रीछ का किस्सा सुना रहा था। मैं यकीन से कह सकता हूँ कि अगर रीछ ने उसके मुस्कुराते चेहरे को देख लिया होता तो उसकी हमला करने की हिम्मत ही चली जाती।

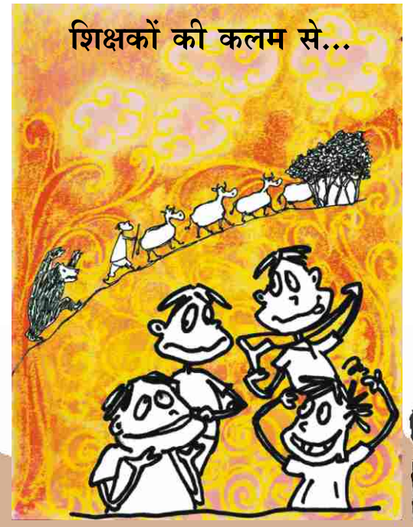

पढ़ने के लिए तो अपने स्कूल ही आना था ना!

मीनू मिश्रा

हमारे यहाँ एक बच्चा पढ़ता था – रूपांशु। जब वह स्कूल में आया था तो तीन साल का था। शुरू-शुरू में वह बहुत रोता था। पर जल्द ही वह स्कूल में घुल-मिल गया था। रूपांशु बहुत सुन्दर चित्र बनाता था। और शरमाता भी बहुत था। जब वह पाँच वर्ष का हुआ तो उसके पापा का ट्रांसफर जालौर हो गया। रूपांशु से पूछने पर कि क्या तुम अब जालौर में रहोगे? तो उसने कहा, "हाँ, पर पढ़ने तो मैं अपने ही स्कूल में आऊँगा ना।"

और एक दिन रूपांशु जालौर चला गया। पता नहीं क्यों हम हमेशा उसे स्कूल में ही ढूँढते! उसे स्कूल में देखने का मन होता! फिर एक दिन उसका फोन आया। वह रो रहा था। बोला, "मीनू आंटी! पढ़ने के लिए तो अपने स्कूल ही आना था ना।" मैं उसे समझाती।

इस राखी वह सवाईमाधोपुर आया। हम सबसे मिला। स्कूल आया। मेरे घर भी आया। बहुत शरमा रहा था। अपनी मम्मी के पीछे छुप रहा था। मैंने उसे पास बुलाया। वह हर बात का जवाब केवल "हाँ" या "ना" में दे रहा था। थोड़ी देर बाद उन लोगों के जाने का समय हो गया। सब गाड़ी में बैठ गए। मैंने "टा टा" किया। उस वक्त बहुत तकलीफ हो रही थी। आँसू आ गए। पता नहीं, अपने इस बच्चे को मैं फिर कब देख पाऊँगी?

जब मैं पहली बार एक स्कूल में पढ़ाने गई तो वहाँ के बच्चों ने मुझे शुरू में स्वीकार नहीं किया। वे मेरी कोई बात नहीं मानते थे। काफी रेशान करते थे। बार-बार यही कहते कि तुम यहाँ से चली जाओ। सामान को इधर-उधर छिपा देते और पूछो तो कहते कि उन्हें पता नहीं। उन्होंने मेरा नाम भी निकाल दिया और उसी नाम से मुझे बुलाते।

ओजू पूँछूँगा

रंजीता

एक बार मैं समूह में पढ़ा रही थी। कुछ बच्चे अपना कार्य कर रहे थे। मेरे समूह में एक बच्चा ऐसा था जिसकी नाक हमेशा बहती रहती थी। उसे नाक साफ करने के लिए बार-बार कहना पड़ता था। शुरू में तो कुछ समय के लिए उसने नाक व हाथों को पानी से साफ किया। बार-बार कहने पर पर बच्चे भी उसका मज़ाक बनाते। कोई कहता, "क्या करेगा, साफ करके डिब्बा भर के रख ले। हलुआ बनाने के काम आएगा।" कोई कहता, "रोटी पर लगा के खा ले। इकट्ठा करके पीपा भर ले, बाज़ार में बेचकर पैसे ले लेना।" वो उनकी बातों को सुनकर कुछ हँस देता और कहता, "तेरे को चाहिए तो ले ले।" ऐसे उन बच्चों की चुहलबाज़ी चलती रहती। बार-बार हाथ और नाक पानी से धोने के लिए उस बच्चे को उठकर जाना पड़ता था। कुछ समय बाद जब भी उसे नाक साफ करने के लिए कहा जाता, वह अपनी शर्ट के बाजू से नाक साफ कर देता और अपने काम में लग जाता। एक दिन वह शर्ट पहनकर नहीं आया और नाक साफ करने के लिए अपनी बनियान का उपयोग कर रहा था। मेरी उस बच्चे की तरफ पीठ थी। अचानक उसे ज़ोर की छींक आई और उसका काफी सारा नाक एक साथ बाहर आ गया। मुझे इस बात का पता नहीं था। मैं आराम से काम करवाती रही। जब लंच हुआ और मैं पानी पीने गई तो मेरी साथी शिक्षिका ने कहा, "तुम्हारी चुन्नी पर क्या लगा है?" मैंने देखा तो मेरी चुन्नी पर काफी सारा नाक लगा हुआ था। मुझे समझ नहीं आया यह मेरे कपड़ों पर कहाँ से आया। उसे पानी से साफ करते हुए मैं सोचने लगी। मैं भी वही

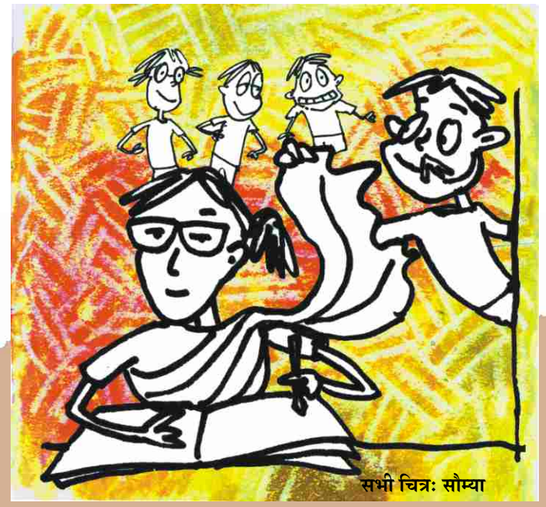

सभी चित्रः सौम्या

सोच रही थी। तभी मुझे उस बच्चे का ध्यान आया। मैंने जाकर उससे पूछा कि क्या तूने मेरी चुन्नी से नाक साफ किया है? उसने पहले तो मना कर दिया और कहा कि तुम्हारी चुन्नी से क्यों साफ करूँगा? मैंने तो अपनी बनियान से साफ किया था। लेकिन कुछ बच्चों ने बता दिया कि इसी ने नाक साफ किया था। वह कह रहा था कि आज मैं कुर्ता पहन के नहीं आया। मैडम की चुन्नी से नाक साफ करूँगा। इसके बाद मैंने उस बच्चे से बात की तो उसने यह बात मान ली और हँसने लगा। इसके बाद छुट्टी में जाते समय बोलकर गया, "ओजू पूँछूँगौ (और पौंछूँगा)।" अगले दिन मैंने उस बच्चे को एक रुमाल दिया। अब वह उसी का इस्तेमाल करता है।